vinetur

कीटनाशकों का अत्यधिक इस्तेमाल पुर्तगाल के वाइन उद्योग को तबाह कर सकता है: Jorge Böhm

लिस्बन के एक उद्योग समारोह में उन्होंने पुर्तगाल से रोग-प्रतिरोधी अंगूर किस्में अपनाने की अपील की, जिनसे बार-बार रासायनिक उपचार की जरूरत घटती है

सोमवार, 9 नवंबर 2026



7-8 नवंबर को लिस्बन कांग्रेस सेंटर में हुए Essência do Vinho समारोह के दौरान जर्मन वाइन उत्पादक Jorge Böhm ने चेतावनी दी कि अंगूर के बागों में कीटनाशकों का लगातार इस्तेमाल पुर्तगाल के वाइन उद्योग और उपभोक्ताओं, दोनों को नुकसान पहुंचा सकता है।

Plansel की ओर से सोमवार, 9 नवंबर को जारी बयान के मुताबिक, Böhm ने कहा, "पुर्तगाल अंगूर के बागों में कीटनाशकों का इस्तेमाल और जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल जारी रखे हुए है। अल्पावधि में यह देश की वाइन और उपभोक्ताओं के लिए विनाशकारी होगा।"

Quinta da Plansel और Viveiros Plansel के संस्थापक Böhm ने अपनी नई किताब Livro Branco das Castas Vitícolas के विमोचन के दौरान यह टिप्पणी की। उन्होंने इस अवसर का इस्तेमाल रोग-प्रतिरोधी अंगूर किस्मों को तेजी से अपनाने

और अंगूर की खेती में वैज्ञानिक नवाचार के प्रति अधिक खुले रवैये की पैरवी के लिए किया।

बयान के अनुसार, Böhm ने कहा कि अगर पुर्तगाल अंगूर की नई किस्में लाने का विरोध जारी रखता है, तो वह दूसरे वाइन उत्पादक देशों से पिछड़ने का जोखिम उठाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि पुर्तगाल में किए जा रहे शोध को लगातार समर्थन मिलना चाहिए, ताकि देश ऐसी विदेशी किस्मों पर निर्भर न हो जाए जो वहां की मिट्टी और जलवायु के अनुकूल न हों।

बयान में पुर्तगाल के अंगूर के बागों में कीटनाशकों के इस्तेमाल के विशिष्ट आंकड़े नहीं दिए गए और न ही उन रसायनों या तरीकों का नाम बताया गया जिन्हें Böhm सबसे बड़ा जोखिम मानते हैं। हालांकि, उनकी टिप्पणियां वाइन क्षेत्र में चल रही उस व्यापक बहस का हिस्सा हैं कि अंगूर के बागों को रोगों से बचाते हुए रासायनिक इनपुट कैसे घटाए जाएं और गर्म तथा अधिक अस्थिर मौसम के अनुरूप कैसे ढला जाए।

Böhm की दलील रोग-प्रतिरोधी अंगूर किस्मों पर केंद्रित है। इनका प्रजनन इस तरह किया जाता है कि वे रोगों के दबाव को बेहतर ढंग से सह सकें और बार-बार रासायनिक उपचार की जरूरत घटे। बयान में उन्होंने कहा कि पुर्तगाल में अंगूर की खेती और वाइन उत्पादन का भविष्य तय करने वाले फैसलों में वैज्ञानिक ज्ञान की बड़ी भूमिका होनी चाहिए।

किताब के विमोचन में संगीतकार, दृश्य कलाकार और पूर्व राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार Manuel João Vieira भी शामिल हुए। उन्होंने क्षेत्र में बदलाव की धीमी रफ्तार को लेकर Böhm की आलोचना का समर्थन किया और कहा कि वाइन के मामले में पुर्तगाल अब भी “मध्य युग” में है। Plansel के मुताबिक, Vieira ने पुर्तगाली घरों तक “पाइप से वाइन” पहुंचाने की अपनी पुरानी मांग भी दोहराई।

Plansel ने कहा कि Böhm के रुख के पीछे कंपनी का लंबे समय से जारी अंगूर की बेलों का शोध कार्यक्रम है। कंपनी के अनुसार, Viveiros Plansel द्वारा विकसित चुने हुए बेल-क्लोन अब पुर्तगाल और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में रोपण के लिए हर साल उत्पादित प्रमाणित बेलों का लगभग 50% हिस्सा हैं।

कंपनी ने कहा कि यह शोध कई दशकों से एवोरा विश्वविद्यालय और पूर्व National Agronomic Station सहित संस्थानों के साथ साझेदारी में किया जा रहा है। यह स्टेशन अब पुर्तगाल के National Institute for Agrarian and Veterinary Research (INIAV) का हिस्सा है। कंपनी के मुताबिक, मौजूदा ध्यान ऐसे पौध-सामग्री पर है जो जलवायु परिवर्तन और पौध स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियों का बेहतर सामना कर सके।

पुर्तगाल से Böhm का जुड़ाव कई दशक पुराना है। Plansel के मुताबिक, वह पहली बार 1961 में देश पहुंचे थे। Seychelles जा रही जिस नौकायन नौका पर वह यात्रा कर रहे थे, उसे Cascais में रुकना पड़ा और बाद में रात के समय एक मछली पकड़ने वाली नाव ने उसे टक्कर मार दी। कंपनी ने कहा कि इस घटना के बाद वह कुछ समय पुर्तगाल में रुके और देश तथा यहां की अंगूर किस्मों की विविधता में उनकी स्थायी दिलचस्पी पैदा हुई।

कंपनी के अनुसार, वह बाद में लौटे और 1970 के दशक में Montemor-o-Novo में बस गए, जहां उन्होंने पुर्तगाली किस्मों के अध्ययन, चयन और सुधार का काम शुरू किया। 1981 में उन्होंने Viveiros Plansel की स्थापना की और शोध तथा क्लोन चयन कार्यक्रम शुरू किया, जो समूह के कारोबार और प्रमाणित बेल-सामग्री के उत्पादन का केंद्रीय हिस्सा बन गया।

Plansel, Böhm को पुर्तगाली अंगूर किस्मों के अध्ययन और प्रचार से सबसे निकटता से जुड़े व्यक्तियों में से एक बताती है। कंपनी के मुताबिक, Livro Branco das Castas Vitícolas के प्रकाशन के जरिए उनका उद्देश्य इस व्यापक चर्चा को आगे बढ़ाना है कि पुर्तगाल का वाइन उद्योग वैज्ञानिक, पर्यावरणीय और व्यावसायिक दबावों का सामना कैसे करे—ये दबाव पहले ही अंगूर की खेती को बदल रहे हैं।